

जामिया ने एक भव्य समारोह में मनाई भारत के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' की 150वीं वर्षगांठ; सामूहिक गायन और इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संबोधन का किया सीधा प्रसारण

नई दिल्ली, 7 नवंबर, 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के कुलपति प्रोफेसर मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी आज भारत के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' की भव्य 150वीं वर्षगांठ मनाने में राष्ट्र के साथ शामिल हुए। इस अवसर पर एफटीके-सीआईटी सभागार में गीत का सामूहिक गायन किया गया और उसके बाद माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संबोधन का सीधा प्रसारण किया गया। इस अवसर पर संकायों के डीन, केंद्रों के निदेशक, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और विश्वविद्यालय के कर्मचारी मौजूद थे। नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के वर्ष भर चलने वाले स्मरणोत्सव का उद्घाटन करते हुए माननीय प्रधानमंत्री को देखकर, जहां उन्होंने एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया, जेएमआई के सीआईटी सभागार में माहौल देशभक्ति और मातृभूमि के प्रति प्रेम से भर गया।

अपने उद्घाटन भाषण में, रजिस्ट्रार प्रो. महताब आलम रिज़वी ने राष्ट्रीय गीत के इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए विस्तार से बताया कि कैसे 1905 के बंगाल विभाजन के दौरान 'वंदे मातरम' राष्ट्रीय प्रतिरोध का युद्धघोष बन गया। राष्ट्र के सांस्कृतिक और भावनात्मक एकीकरण में इसकी भूमिका के बारे में बोलते हुए, प्रो. रिज़वी ने कहा कि यह गीत "भाषा, क्षेत्र और जाति की बाधाओं को पार कर गया और विविध पृष्ठभूमि के भारतीयों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु का काम किया।" उन्होंने याद किया कि कैसे गीत की "संस्कृत शब्दावली और सार्वभौमिक आध्यात्मिक स्वर ने विभिन्न समुदायों के साथ प्रतिध्वनित किया और राजनीतिक एकता के उभरने से पहले एक भावनात्मक एकता का निर्माण किया।" प्रो. रिज़वी ने कहा कि 'माँ, मैं आपको नमन करता हूँ' पंक्ति "राष्ट्र के लिए सेवा, निस्वार्थता और श्रद्धा के आदर्शों" को प्रतिबिंबित करती है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की विरासत और लोकाचार में वंदे मातरम की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए, प्रो. रिज़वी ने कहा कि "1920 में स्थापित जेएमआई स्वयं भारत के समग्र राष्ट्रवाद का एक उत्पाद था, और यह गीत जिन मूल्यों का प्रतीक है, वही इसकी उपज है। जहाँ मौलाना मोहम्मद अली, हकीम अजमल खान और डॉ. ज़ाकिर हुसैन जैसे जेएमआई के संस्थापकों ने समावेशी शिक्षा और सांस्कृतिक सद्भाव पर ज़ोर दिया, वहीं वंदे मातरम के पीछे निहित नैतिक भावना, समर्पण, निस्वार्थ सेवा और मातृभूमि के प्रति प्रेम, हमेशा से जेएमआई के मिशन के साथ पूरी तरह से संरेखित रही है।" प्रो. रिज़वी ने आगे कहा कि "विश्वविद्यालय विविधता में एकता, राष्ट्र सेवा और शैक्षिक सशक्तिकरण की भावना को कायम रखता है, जो वंदे मातरम में वर्णित आदर्शों के जीवंत प्रतीक हैं।" उन्होंने यह कहते हुए समापन किया, "सारतः, वंदे मातरम ने राष्ट्र प्रेम को एक पवित्र कर्तव्य में बदल दिया। उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष से लेकर आधुनिक लोकतंत्र की चुनौतियों तक, इसका आह्वान "माँ, मैं तुम्हें नमन करता हूँ" भारत को भावना, संस्कृति और चेतना में एक सूत्र में बाँधता रहा है।"

जामिया के कुलपति प्रो. आसिफ़ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा, "हर जीवित प्राणी, चाहे वह मनुष्य हो, पशु हो या पौधे, अपनी मातृभूमि के प्रति गहरा प्रेम रखता है। हमारा भौगोलिक निवास स्थान गहन भावनात्मक लगाव पैदा करता है; राष्ट्र प्रेम स्वाभाविक भी है और प्रबल भी। इसी प्रकार, राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' मातृभूमि, हमारे राष्ट्र भारत के प्रति लगाव और प्रेम की इसी प्रबल भावना को जागृत करता है।"

प्रोफेसर आसिफ़ ने कहा, "वंदे मातरम एक एकीकृत आह्वान बन गया, भावनाओं से भरा एक नारा जिसने लोगों को औपनिवेशिक शासन का विरोध करने के लिए एक झंडे तले एकजुट किया। यह उस समय राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित करने का सर्वोच्च आह्वान था जब देश औपनिवेशिक शासन के अधीन था।"

प्रोफेसर आसिफ़ ने कहा, "सम्पूर्ण जामिया मिल्लिया इस्लामिया समुदाय की ओर से मैं बंकिम चंद्र चटर्जी, रवींद्रनाथ टैगोर, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों तथा राष्ट्र निर्माताओं के प्रति उनके राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं।"

राष्ट्रवाद के इतिहास, भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई और इसमें राष्ट्रीय गीत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर आसिफ़ ने कहा, "आज, राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' की 150वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के इस ऐतिहासिक अवसर पर, हम अटूट प्रतिबद्धता, जुनून और गर्व

छात्र कल्याण की डीन प्रोफेसर नीलोफर अफज़ल ने इस आयोजन को सफल बनाने में दिए गए समर्थन के लिए जेएमआई के कुलपति और रजिस्ट्रार को धन्यवाद दिया और विशेष रूप से जेएमआई के संकाय सदस्यों और प्रशासनिक कर्मचारियों की उनकी उत्साही भागीदारी के लिए सराहना की।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी